

---

Shri Govindaraja Stuti

श्रीगोविन्दराजस्तुतिः

Document Information

---

Text title : Shri Govindaraja Stuti 06 17

File name : govindarAjastutiH.itx

Category : vishhnu, stuti, krishna

Location : doc\_vishhnu

Proofread by : Gopalakrishnan

Description/comments : From stotrArNavaH 06-17

Latest update : September 18, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 29, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीगोविन्दराजस्तुतिः



सेवे गोविन्दराजं सुरनरमुनिभिः सेव्यमानाङ्घ्रिपद्मं  
लक्ष्मीभूभ्यां लसन्तं मणिमयमकुटोद्भासमानाननाञ्जम् ।  
विभ्राणं शङ्खचक्रे शशिरविलसिते हस्तपद्मद्वयाभ्यां  
प्रलं भोगीन्द्रतल्पं वरगुणजलधिं मेघसच्छायदेहम् ॥ १ ॥

मुग्धनीलाळकास्येन्दुमुत्फुलाम्भोजलोचनम् ।  
कुन्दकुङ्कुमसञ्छात्रदशनं पल्लवाधरम् ॥ २ ॥ (सच्छात्र)  
सुभूलतं चम्पकालीविडम्ब्युन्नतनासिकम् ।  
चारुमन्दस्मितं हेमकर्णभूषणमञ्जुळम् ॥ ३ ॥

चलत्कुण्डलसंशोभिकपोलफलकद्वयम् ।  
ग्रैवेयकोल्लसत्कम्बुकण्ठं कौस्तुभभूषितम् ॥ ४ ॥

सुगन्धतुलसीमालामुक्ताहारकवक्षसम् ।  
शङ्खचक्रधरं रुक्मवलयाङ्गदबाहुकम् ॥ ५ ॥

कटीतटीप्रविलसद्वृत्तहेमाम्बरं प्रभुम् ।  
गजशुद्धास्वर्मिसक्थिं मुकुरामुग्धजानुकम् ॥ ६ ॥ (गजशुण्डास्पर्धिसक्थं)

कामतूणीरसदृशजङ्घादण्डोपशोभितं  
कणत्प्रत्युत्तमाणिक्यमञ्जीरपदपङ्कजम् ॥ ७ ॥

कन्दर्पकोटिसंङ्काशं नीलाम्बुधरविग्रहम् ।  
आनन्दकन्दलं गोपरमणीनयनोत्सवम् ॥ ८ ॥

पुण्यराशिं वेदवेद्यं दयाजन्मनिकेतनम् ।  
लोकदुःखतमोवृन्दचण्डभानुं नरोत्तमम् ॥ ९ ॥

नित्यं निरञ्जनं भक्तजनाम्बुधिकलानिधिम् ।  
दशरूपधरं देवं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणम् ॥ १० ॥

निबिडोत्फुल्लकुसुमफलकोरकमण्डितैः ।  
शङ्खस्वनत्परभृतप्रमुखाण्डजशेभितैः ॥ ११ ॥  
चम्पकाशोकपुन्नागचिञ्जाम्रवकुळुद्रमैः ।  
रम्ये विशाले स्वच्छाम्बुपुण्डरीकसरस्तटे ॥ १२ ॥  
प्राकारगोपुरोदग्रमण्डपान्वितसन्निभौ । (सन्निधौ)  
शान्तं गोविन्दराजं तमहर्निशमहं भजे ॥ १३ ॥  
रङ्गाधिपं रविकुलीनच्रुनुपैः सुपूज्यं  
भोगीन्द्रभोगशयनीयतले शयानम् ।  
ज्ञानप्रदं तनुभृतां वरदं वरेण्यं  
श्रीनाथमादरमहं सततं भजामि ॥ १४ ॥  
इति सुदर्शनवरदनारायणदासकृता श्रीगोविन्दराजस्तुतिः सम्पूर्णा ।  
Proofread by Gopalakrishnan

---

—  
*Shri Govindaraja Stuti*

pdf was typeset on June 29, 2023

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

